आमने-सामने

# युवा यौनिकता-कुछ सवाल

**रीना ओ-लियरी**

**मेरा नाम रीना ओ-लियरी** है और मैं एक अमरीकी छात्रा हूं, सितम्बर 2000 से *जागोरी* के साथ जुड़ी हूं। इस दौरान बिताए समय में मैंने अमरीकी और भारतीय संस्कृतियों के फ़र्क़ो को नज़दीकी से अनुभव किया है। मुझे विशेषतः लड़कियों व औरतों से समाज की लैंगिक अपेक्षाओं व यौनिकता से जुड़े आयामों ने काफी प्रभावित किया है।

एक विदेशी होने के नाते मैं भारत में व्याप्त यौनिक व लैंगिक नियमों को उनकी तमाम जटिलताओं के साथ समझने का दावा तो नहीं कर सकती। पर मैं अमरीका में एक लड़की को मिलने वाले यौनिकता से जुड़े तीक्ष्ण व परस्पर विरोधी संदेशों के बारे में ज़रूर सोचती हूं। मेरे अनुभव मेरी नस्ल, वर्ग व भौगोलिक ठिकाने द्वारा परिभाषित होते हैं। अमरीका में विविध पृष्ठभूमि से आने वाली औरतों के लिए सामाजिक व्यवहारों को लेकर अलग-अलग संदेश व अपेक्षाएं होती हैं। एक विदेशी दर्शक के लिए इस जटिल ताने-बाने को समझ पाना मुश्किल होगा।

भारत में मैं इसी विदेशी दर्शक की तरह हूं और मुझे इसी तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अमरीका में युवा लड़कियों के यौनिकरण का विषय नारीवादियों के लिए एक गंभीर मुद्दा है। वहां युवा लड़कियों पर खुद को यौनिक रूप से वांछनीय और रज़ामंद दिखाने का सांस्कृतिक दबाव होता है। बच्चियों के लिए बिकने वाली खिलौनानुमा गुड़ियाएं परदर्शी कपड़े पहनती हैं। दस वर्ष की बच्चियों को कामोत्तेजक अंदरूनी वस्त्र बेचे जाते हैं। युवा लड़कियों को बेचे जाने वाले लोकप्रिय संगीत में गायिकाएं खुद को उत्तेजक व कामुक अंदाज़ में पेश करती हैं।

भारत में मेरे अनुसार मुद्दा अलग है। यहां युवा लड़कियां विशेषकर जो मध्य व उच्च वर्ग परिवारों से आती हैं पर अपनी यौनिकता को नकारने का पारिवारिक व सामाजिक दबाव रहता है। युवा लड़कियों को यौनिक दबावों से बचाकर रखना शायद अच्छा होता हो परन्तु युवावस्था तक पहुंचने पर अपनी यौनिक पहचान को तलाश करना व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है।

लड़कियों की उभरती यौनिकता चुनौतीपूर्ण होती हैं — माता-पिता शिक्षकों व खुद लड़कियों के लिए भी। अमरीका में लड़कपन से औरतपन का बदलाव प्रायः उभयभाविता से दिया जाता है व इसमें ज़्यादातर समस्याएं व चुनौतियां दिखाई पड़ती हैं। युवा लड़कियों को अचानक लड़कों व पुरुषों के यौनिक सत्कार का सामना करना पड़ता है जो डरावना व कष्टप्रद हो सकता है। लड़कपन से स्त्रीत्व तक का सफ़र बहुत रोमांचक और आनंद भी होता है। परन्तु अमरीका में इस परिवर्तन को एक लड़की के जीवन में होने वाले महत्वपूर्ण लम्हों के रूप में हम नहीं मनाते।

एक अन्य कारण जो इस विषय को और अधिक जटिल बनाता है वह अमरीका का चिकित्सीय प्रवाह — वहां लड़कियों को कम उम्र में परिपक्वता का आगमन होता है। डाक्टरों के अनुसार बड़ी संख्या में अमरीकी बच्चियां आठ-नौ साल की उम्र में परिपक्व होने लगी हैं। इस प्रवाह के कारण तो जटिल हैं परन्तु इसका प्रभाव बेहद महत्वपूर्ण हैं।

जब एक बच्ची का शरीर छोटी सी उम्र मे परिपक्वता हासिल कर लेता है तो उसके लिए इस प्राकृतिक बदलाव के क्या मायने होते हैं? हम अपनी बच्चियों को जल्दी परिपक्व होने के दबाव से बचाने के साथ-साथ लड़कपन से स्त्रीत्व तक पहुंचने के सफर को आनन्द के साथ मनाने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं। हम उन्हें अपनी चाहतों और आकांक्षाओं को नरमी और सुख के साथ महसूस करने में कैसे मदद करें? मेरे ख्याल में इन बौखला देने वाले सवालों का जबाव ढूंढने की परेशानी ही एक संस्कृति में स्त्री यौनिकता को लेकर व्याप्त उभयभाविता और किंकर्तव्यविमूढ़ता को रेखांकित करती है।